

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 2, परिचय भाग 2, विषय-वस्तु

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह रूथ के माध्यम से जोशुआ पर अपनी शिक्षा में डॉ. डेविड हॉवर्ड हैं। यह सत्र 2, जोशुआ का परिचय, भाग 2, विषय-वस्तु और धर्मशास्त्र है।

मैं अब जोशुआ की किताब के उद्देश्य के बारे में बात करना चाहता हूँ।

ऐसा क्यों लिखा गया? और मैं जो देखूंगा वह है पुस्तक में व्यापक विषय और फिर कुछ सहायक विषय जो आगे बढ़ते हैं। इसलिए, हम पुस्तक के धर्मशास्त्र के बारे में अधिक सोचेंगे। और इसलिए, उद्देश्य के संदर्भ में, पुस्तक क्यों लिखी गई थी? एक स्तर पर यह लिखा गया था, या सामान्य तौर पर, यह एक व्याख्यात्मक इतिहास प्रदान करने के लिए लिखा गया था, और यह महत्वपूर्ण है, एक व्याख्यात्मक इतिहास, लोगों के रूप में इज़राइल के जीवन का एक टुकड़ा।

इसे केवल इतिहास के लिए इतिहास की तरह नहीं लिखा गया है। यहोशू के समय में इस्राएल के जीवन में बहुत सारे अंतराल हैं। ऐसी कुछ चीज़ें हैं जिन्हें हम जानना पसंद करेंगे लेकिन हम नहीं जानते।

तरह-तरह के सारांश कथन हैं, और हम यह नहीं सीखते कि परमेश्वर ने कनानी क्षेत्र के हर हिस्से और भूमि और शहरों के साथ क्या किया। तो, यह हमें लेंस के माध्यम से दे रहा है, एक निश्चित लेंस, और अधिक विशेष रूप से यह जोशुआ के तहत उस अवधि को संदर्भित करता है जब इज़राइल भूमि में प्रवेश कर रहा है और बस रहा है, और यह वह भूमि है जिसका वादा सदियों पहले अब्राहीम और उसके वंशजों से किया गया था। तो, पुस्तक की एक बड़ी विशेषता यहां वादों को पूरा करने का विचार है।

और इसमें सदैव ईश्वर ही है जो घटनाओं पर नियंत्रण रखता है। तो फिर, जैसा कि हमने पहले खंड में कहा था, अक्सर हम इस पुस्तक को केवल इस्राएलियों और कनानियों के बीच की लड़ाइयों और संघर्ष के रूप में सोचते हैं, लेकिन वास्तव में हमें इसे ईश्वर के लेंस के माध्यम से देखना चाहिए जो निर्देशन, नियंत्रण और देखरेख कर रहा है यहाँ क्या हो रहा है। पुस्तक में निश्चित रूप से नाटकीय चमत्कार हैं, और पुस्तक में सभी जीतों का श्रेय भगवान को दिया गया है।

इसलिए, मैंने बोर्ड पर वह लिखा है जिसे मैं पुस्तक में प्रमुख विषय के रूप में देखूंगा, और यह है कि भगवान ने अपने लोगों इसराइल को विरासत के रूप में कनान की वादा की हुई भूमि दी है। और मैं इस वाक्य के हर हिस्से की व्याख्या करना चाहता हूँ क्योंकि इस वाक्य का हर हिस्सा पाठ के कुछ हिस्सों की बारीकियों से लिया गया है, जैसे कि इसमें बुलबुले उठ रहे हों। इसलिए, मैंने इसे ऊपर से नीचे थोपने की तरह नहीं लिखा है, बल्कि यह पाठ में मौजूद सुरागों से स्वाभाविक रूप से विकसित हुआ है।

तो चलिए मैं इसके बारे में कुछ कहता हूँ। सबसे पहले, मैंने यहां भगवान का नाम इसलिए रखा है क्योंकि मैं किताब में भगवान को प्रमुख अभिनेता, प्रमुख पात्र और प्रमुख नायक के रूप में देखूंगा, जोशुआ या किसी अन्य मानवीय चरित्र के रूप में नहीं। ईश्वर ही वह है जो मूलतः पुस्तक में सब कुछ कर रहा है।

और यह भूमि उसका उपहार है। जब मैंने पहली बार अपने करियर में पढ़ाना शुरू किया था, तो मैं अक्सर छात्रों को बाइबिल की हर किताब के बारे में अनिवार्य रूप से सोचने के लिए प्रेरित करने की कोशिश करता था, लेकिन मेरे क्षेत्र में, शायद एक शब्द भी सोचने के लिए। प्रत्येक पुस्तक का वर्णन करने के लिए, उत्पत्ति, शायद आरंभ या कुछ और। और यहोशू, जो शब्द आमतौर पर दिमाग में आता था वह था भूमि।

और भूमि को बसने की जगह के केंद्र बिंदु के रूप में सोचना। लेकिन, और यहोशू की किताब में यह सच है, लेकिन यह भी सच है कि भूमि को भगवान के हाथ से एक उपहार के रूप में देखा जाता है। और जैसे-जैसे हम पुस्तक के अगले खंडों में आगे बढ़ेंगे, हम इसे देखेंगे।

यह ईश्वर द्वारा भूमि का दिया जाना है, और यह वह भूमि है जिसका वादा किया गया था। ध्यान दें कि मैंने वादा की गई भूमि का पूंजीकरण नहीं किया है। हम अक्सर इसे बड़े अक्षरों में लिखे हुए को किसी देश के लिए एक शीर्षक के रूप में देखते हैं।

लेकिन यह उस भूमि को देना है जिसका वादा वर्षों पहले इब्राहीम को किया गया था। हम उन वादों के बारे में दूसरे खंड में देखेंगे। तो, किताब वादों को पूरा करने के बारे में है।

और किसके वादे? वे भगवान के वादे हैं। तो, यह हमें मुख्य अभिनेता के रूप में भगवान के पास वापस लाता है। और निःसंदेह, यह भूमि है।

वह भूमि को जीतने और फिर उस भूमि पर बसने पर केंद्रित है। लेकिन यह कौन सी ज़मीन है? यह कनान की भूमि है। और हम इसे एक तरह से जानते हैं।

यह बिल्कुल स्पष्ट है। लेकिन मैं खुद को याद दिलाने के लिए इसे अपने बयान में शामिल करता हूँ कि भगवान ने अंतरिम में अपना मन नहीं बदला। परमेश्वर ने सैकड़ों वर्ष पहले इब्राहीम को भूमि देने का वादा किया था।

और संघर्षों वगैरह के बावजूद, भगवान ने यह नहीं कहा, आप जानते हैं, मेरा मन बदलो। मैं तुम्हें इथियोपिया या मोआब की भूमि क्यों नहीं दे देता? नहीं, यह वही ज़मीन है। और उसने उसे वह ज़मीन देने का वादा पूरा किया।

उसने इसे किसे दिया? निस्संदेह, इस्राएलियों के लिए। इस्राएली कौन थे? वे परमेश्वर के लोग थे। इसलिए, यह उस रिश्ते पर जोर देता है जिसे हम पुराने नियम में बार-बार देखते हैं।

मैं कहूंगा कि हमारे पास अक्सर होता है; हम कभी-कभी उस चीज़ के बारे में सोचते हैं जिसे मैं टेस्टामेंट्स के बीच झूठी रूढ़िवादिता या झूठी द्वंद्ववादिता कहूंगा। फिर, मैंने ईश्वरीय गुरुओं,

शिक्षकों और पादरियों के माध्यम से इनमें से कुछ द्वंद्व सीखे। और एक यह था कि पुराने नियम का परमेश्वर क्रोध का परमेश्वर था।

नया नियम प्रेम का देवता। और यहां नियम-कायदे और कानून थे. यहां रिश्ता वगैरह था.

और ऐसे कारण हैं कि लोगों ने यही सिखाया और आज भी वही सोचते हैं। लेकिन मैं कहूँगा कि वहाँ भी है, वे वास्तव में झूठे द्वंद्व हैं। पुराने नियम का ईश्वर रिश्ते का ईश्वर है।

वह वही है जो अपने लोगों से प्यार करता था। और इसीलिए मैंने इसे यहां शामिल किया है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि मैं समझता हूँ कि यह ईश्वर है जो अपने लोगों से प्यार करता है, वादे पूरे करता है। और वह यह किसलिए कर रहा था? यह उनकी विरासत थी.

पुस्तक में विरासत के लिए कई अलग-अलग शब्द हैं। और वे सभी इस पर ईश्वर से एक उपहार के रूप में और इज़राइल द्वारा इसे अपनी विरासत के रूप में प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। वास्तव में, एक चीज़ जो मैं अपनी कक्षाओं में करता हूँ, आप इसे स्वयं एक अभ्यास के रूप में, एक शिक्षाप्रद अभ्यास के रूप में आजमा सकते हैं।

मैं चाहता हूँ कि मेरी कक्षाएँ जोशुआ की पूरी किताब एक बार में पढ़ें। फिर दो स्तरों के अनुसार पुस्तक की रूपरेखा लिखें। प्रमुख स्तर, पाँच, छह, आठ अध्याय लंबा है।

फिर दूसरे स्तर पर, पूरी किताब का एक अध्याय। और मैं उनसे रूपरेखा के प्रत्येक बिंदु पर विरासत शब्द या क्रिया विरासत या विरासत या विरासत का उपयोग करने की अपेक्षा करता हूँ। और यह उन अध्यायों में करना आसान है जो भूमि के वितरण के बारे में बात करते हैं, अध्याय 12 से 21 तक।

या 13 से 21. लेकिन पहले के अध्यायों में यह थोड़ा अधिक कठिन है। लेकिन मेरा कहना यह है कि हम घटित होने वाली घटनाओं के बारे में नहीं सोचते।

लेकिन हम सोचते हैं, अगर हम वर्षों बाद पुस्तक के लेखक के बारे में सोचें। लेखक क्या करने का प्रयास कर रहा है? और लेखक इस भूमि को ईश्वर की विरासत के रूप में बताने का प्रयास कर रहा है। तो शुरुआती अध्यायों में भी, आगे देखते हुए, जिसे मैं भूमि विरासत में लेने की तैयारी कहूँगा, अध्याय 1 से 5 तक। जॉर्डन पार करने के लिए तैयार होना।

खुद को शुद्ध करना. चीज़ों को याद रखना वगैरह। यह सब भूमि का उत्तराधिकार प्राप्त करने की तैयारी है।

इसलिए, हम अध्याय 1, अध्याय 2, या अध्याय 3 के विषय पर उनकी शर्तों पर बात कर सकते हैं। लेकिन पुस्तक की समग्र व्यापकता के संदर्भ में, यदि यह एक वैध बिंदु है जिसे हमने जमीनी स्तर से प्राप्त किया है। फिर पुस्तक का प्रत्येक भाग उस ओर इंगित करने में सक्षम होना चाहिए और उसे समग्र स्वीप के भाग के रूप में देखना चाहिए।

तो, यह मेरा कथन होगा जिसे मैं पुस्तक के समग्र विस्तार के रूप में देखता हूँ। पुस्तक का प्रत्येक भाग किसी न किसी रूप में इसमें शामिल होगा। इसे कहने के अलग-अलग तरीके हैं।

मैं यह नहीं कह रहा कि यही एकमात्र रास्ता है। लेकिन अपने अध्ययन में मैं इसी बिंदु पर पहुंचा हूँ। आगे, हम कुछ विषयों के रूप में जो मैं देखता हूँ उस पर गौर करेंगे।

इस समग्र व्यापक विषय के नीचे की तरह। या हम इसे यहोशू की पुस्तक का धर्मशास्त्र कह सकते हैं। और मैं सात प्रमुख किस्में देखूंगा।

पुस्तक में सात प्रमुख विषय। कुछ दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं। जैसे-जैसे हम विभिन्न खंडों से गुजरेंगे, हम इन्हें विकसित करेंगे।

लेकिन निश्चित रूप से, भूमि का विषय, वादा की गई भूमि का विषय महत्वपूर्ण है। इसे बार-बार प्रदर्शित किया जाता है। इसका वादा इब्राहीम से वर्षों पहले किया गया था।

इसे पीढ़ियों से दोहराया जाता है। और अब अंततः वे इसे प्राप्त कर रहे हैं। और फिर दूसरा विषय परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का विषय है।

तो, मैंने पहले ही इसका उल्लेख किया है। और हम उस पर प्रकाश डालेंगे। इब्राहीम के साथ-साथ मूसा से भी किए गए वादों का संदर्भ मिलता है।

और फिर किताब के भीतर भी। परमेश्वर ने यह वादा किया था, और फिर ऐसा हुआ। और वादों को पूरा करना एक दिलचस्प छोटा उप-विषय भी है।

एक तिहाई वाचा होगी। और वह वाचा जो परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ बान्थी। फिर, वादों सहित।

परन्तु फिर परमेश्वर ने मूसा के द्वारा जो वाचा बान्थी वह भी। परमेश्वर ने लोगों को जो व्यवस्था दी और लोगों को उसका पालन कैसे करना चाहिए। यह जोशुआ की किताब की पृष्ठभूमि की तरह है।

यह कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन यह मौजूद है। एक दिलचस्प विषय यह है कि चौथा विषय आज्ञाकारिता का विषय होगा। मूसा के समय और जंगल में भटकने के दौरान इसराइल के बारे में सोचो।

इजराइल काफी हद तक बहुत विद्रोही लोग थे। उदाहरण के लिए, मैं संख्याओं की पुस्तक को ऐतिहासिक कथा अनुभागों में देखूंगा। जहां कहानी बताई जा रही है।

आप मूसा और हारून के अधिकार के विरुद्ध बार-बार विद्रोह देखते हैं। और स्वयं परमेश्वर के विरुद्ध। और मूसा ने परमेश्वर से बलवा किया।

और उनमें से बहुत सी चीज़ें। तो यहाँ जोशुआ की किताब में, हम एक बहुत अलग तस्वीर देखते हैं। हमें यह एहसास होता है कि हम अब चीजों को अलग तरीके से करने की कोशिश कर रहे हैं।

हम अतीत की गलतियों को दोहराने की कोशिश नहीं करेंगे। और यह भावना है कि अधिक से अधिक लोग एक ही पृष्ठ पर प्रभु का अनुसरण कर रहे हैं। अब हमेशा ऐसा नहीं होता।

वहाँ कुछ महत्वपूर्ण अपवाद हैं। लेकिन आज्ञाकारिता का एक महत्वपूर्ण विषय है। परमेश्वर निश्चित रूप से आज्ञाकारिता का आग्रह करता है।

और अधिकांशतः लोग इसका अनुसरण करते हैं। पाँचवाँ विषय जो मैं देखता हूँ वह पूजा की पवित्रता का संपूर्ण विषय है। पवित्रता का विचार।

और पुस्तक में पवित्र शब्द का प्रयोग बहुत अधिक बार नहीं किया गया है। लेकिन विचार वहीं है। मूलतः, पुराने नियम में पवित्रता का विचार बाहर और दूर अलगाव का विचार है।

उससे जो बुरा है, जो अशुद्ध है, जो अपवित्र है। और इस्राएल पहिले से सन्दूक से, अर्थात् कनानियों से अलग रहे। इसमें कनानियों के विनाश के बारे में चर्चा शामिल है जिसके बारे में हम दूसरे खंड में बात करेंगे।

लेकिन पूजा की पवित्रता का विचार, कि इज़राइल को एक नई जगह पर बड़ा होना है, भगवान की पूजा सही तरीके से करनी है, किताब का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एक छठा बिंदु जो मैं देखूंगा, एक छठा विषय, ईश्वरीय नेतृत्व का विषय होगा। जोशुआ को स्वयं एक नेता के रूप में कार्यभार सौंपा गया है।

अधिकांश पुस्तकों में उन्हें एक आदर्श नेता के रूप में चित्रित किया गया है, जिसमें बहुत कम गलतियाँ हुई हैं। और हम वहाँ नेतृत्व के बारे में कुछ अच्छे सबक सीखते हैं। और अंत में, विश्राम का विषय।

हमारा विचार है कि भूमि में विश्राम है। और परमेश्वर के उपहार, वादों का एक हिस्सा यह है कि लोगों को आराम करना है और भूमि को आराम करना है। इसलिए, एक अर्थ में, यदि हम पेंटाटेच के प्रवाह के बारे में सोचते हैं, तो हम इसके बारे में साहित्यिक संदर्भ के दूसरे खंड में बात करेंगे।

लेकिन पेंटाटेच का प्रवाह वादा किए गए देश में प्रवेश करने और प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। और जोशुआ की किताब पीछे मुड़कर देखती है और कहती है, हम यहाँ हैं। और यह इन सब की पूर्ति नहीं है।

हमें आराम है। तो यह विषय के व्यापक विवरण के तहत सात प्रमुख विषय होंगे जो मैंने आपको इस बिंदु पर दिए हैं।

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड और रूथ के माध्यम से जोशुआ पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2, जोशुआ का परिचय, भाग 2, विषय-वस्तु और धर्मशास्त्र है।